बस्तर विवि में विचार संगोष्ठी आयोजित

जगदलपुर, 9 जनवरी (देशबन्धु)। लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होलकर ने अपने लिए नहीं बल्कि प्रजा के लिए जीवन जीया। तमाम पारिवारिक कष्ट झेलकर लोक के लिए संघर्ष किया। राज्य में रोजगार इत्यादि के लिए कई प्रयास किए। केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक कई मंदिरों का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण कराए। उनका पूरा जीवन प्रजा कल्याण के लिए समर्पित था। इसलिए पुण्यश्लोका कहलाई। उक्त विचार हेमचंद विश्वविद्यालय, दुर्ग के पूर्व कुलपति प्रो. एनपी दीक्षित ने व्यक्त किए। वे महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300 वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में गुरूवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आयोजित विचार संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे।

प्रो. दीक्षित ने बताया कि प्रजा के हित में महारानी अहिल्याबाई छोटे से घर में सामान्य जैसा जीवन व्यतीत किया। आदि गुरू शंकराचार्य की तरह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए अद्वितीय काम किया। विधवा होने के बाद देवी अहिल्याबाई ने प्रजाहित में राज संभाला और अपने उल्लेखनीय कार्यों से प्रजावत्सल कहलाई। अपनी न्यायप्रियता, दानवीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध

देवी अहिल्याबाई अपने कृतित्व से पुण्यश्लोका कहलाई : प्रो. दीक्षित

अहिल्याबाई जनता के हित में कई कठोर निर्णय भी लिए।

प्रो. दीक्षित ने कहा कि विदेशी आक्रांताओं के आने के कारण देश में सती प्रथा और जौहर जैसी सामाजिक समस्याएं थी। उस समय के मालवा के राजा ने अपनी बहु लोकमाता अहिल्याबाई को न्यायप्रक्रिया, कूटनीति और युद्धनीति में साथ लिया। यह उस समय समाज में महिलाओं के सम्मान को दर्शाता है। प्रो. दीक्षित ने बताया कि लोक माता की प्रतिष्ठा, मान्यता और प्रभाव इतनी थी कि विरोधी राज्य भी अपने यहां उनसे मंदिर निर्माण और जीर्णोद्धार करवाने से नहीं रोक पाए। उस समय के राजाओं ने अबला समझकर उनपर आक्रमण करने की कई योजना बनाई लेकिन अहिल्याबाई ने उसका हर तरह से सामना किया। इसके लिए युद्ध के साथ कूटनीति का भी सहारा लिया। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शरद नेमा ने कहा कि लोकमाता का संपूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा। सभी को समान समझते हुए उन्होंने जन कल्याण के लिए कई काम किए। लोकमाता मानव के साथ पशुओं के प्रति भी उदार थीं। न्याय के लिए समान व्यवहार रखा। कुलसचिव डॉ. राजेश लालवाणी ने कहा कि भारत की धरा का गरिमामयी इतिहास रहा है। कई वीरों और संतों ने इस धरती पर जन्म लिया है। प्रजावत्सल देवी अहिल्याबाई का पूरा जीवन प्रेरणादायक है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि केंद्र सरकार ने अतीत के गौरवांवित पलों को महसूस कराने के लिए ऐसे आयोजन समय-समय पर करने का निर्णय लिया है, जिसके माध्यम से हम सभी को अपने अतीत को जानने और बताने का अवसर मिले। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुनेश्वर लाल साहू ने किया। आभार उद्बोधन डॉ. सोहन कुमार मिश्रा ने दिया। कार्यक्रम में वनवासी कल्याण आश्रम के संतोष परांजपे, प्रो. शकील अहमद, डॉ. वीके सोनी, डॉ. सुकृता तिर्की, डॉ. संजय डोंगरे सहित अन्य उपस्थित थे। आयोजन में डॉ. दुर्गेश डिक्सेना व हरीश रामटेके ने सक्रिय सहयोग किया।

Scanned with OKEN Scanner

महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती वर्ष पर बस्तर विवि में विचार संगोष्ठी

देवी अहिल्याबाई अपने कृतित्व से पुण्यश्लोका कहलाईं : प्रो. दीक्षित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जगदलपुर

लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होलकर ने अपने लिए नहीं बल्कि प्रजा के लिए जीवन जीया। तमाम पारिवारिक कष्ट झेलकर लोक के लिए संघर्ष किया। राज्य में रोजगार इत्यादि के लिए कई प्रयास किए। केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक कई मंदिरों का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण कराए। उनका पूरा जीवन प्रजा कल्याण के लिए समर्पित था। इसलिए पुण्यश्लोका कहलाईं।

उक्त विचार हेमचंद विश्वविद्यालय, दुर्ग के पूर्व कुलपति प्रो एनपी दीक्षित ने व्यक्त किए। वे महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में गुरूवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आयोजित विचार संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे।

प्रो दीक्षित ने बताया कि प्रजा के हित में महारानी अहिल्याबाई छोटे से घर में सामान्य जैसा जीवन व्यतीत किया। आदि गुरू शंकराचार्य की तरह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए अद्वितीय काम किया। विधवा होने के बाद देवी अहिल्याबाई ने प्रजाहित में राज संभाला और अपने उल्लेखनीय कार्यों से प्रजावत्सल कहलाईं। अपनी न्यायप्रियता, दानवीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध अहिल्याबाई जनता के हित में कई कठोर निर्णय भी लिए।

प्रो दीक्षित ने कहा कि विदेशी आक्रांताओं के आने के कारण देश में सती प्रथा और जौहर जैसी सामाजिक समस्याएं थी। उस समय के मालवा के राजा ने अपनी बहु लोकमाता अहिल्याबाई को न्यायप्रक्रिया, कूटनीति और युद्धनीति में साथ लिया। यह उस समय समाज में महिलाओं के सम्मान को दर्शाता है।

प्रो. दीक्षित ने बताया कि लोकमाता की प्रतिष्ठा, मान्यता और प्रभाव इतनी थी कि विरोधी राज्य भी अपने यहां उनसे मंदिर निर्माण और जीर्णोद्धार करवाने से नहीं रोक पाए। उस समय के राजाओं ने अबला समझकर उनपर आक्रमण करने की कई योजना बनाई लेकिन अहिल्याबाई ने उसका हर तरह से सामना किया। इसके लिए युद्ध के साथ कूटनीति का भी सहारा लिया।

वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ शरद नेमा ने कहा कि लोकमाता का संपूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा। सभी को समान समझते हुए उन्होंने जन कल्याण के लिए कई काम किए। लोकमाता मानव के साथ पशुओं के प्रति भी उदार थीं। न्याय के लिए समान व्यवहार रखा। कार्यक्रम का संचालन डॉ भुनेश्वर लाल साहू ने किया। आभार उद्बोधन डॉ. सोहन कुमार मिश्रा ने दिया। कार्यक्रम में वनवासी कल्याण आश्रम के संतोष परांजपे, प्रोशकील अहमद, डॉ वीके सोनी, डॉ सुकृता तिर्की, डॉ संजय डोंगरे सहित अन्य उपस्थित थे। आयोजन में डॉ दुर्गेश डिक्सेना व हरीश रामटेके ने सक्रिय सहयोग किया।

भारत की धरा का गौरवमयी इतिहास

कुलसचिव डॉ. राजेश लालवाणी ने कहा कि भारत की धरा का गौरवमयी इतिहास रहा है। कई वीरों और संतों ने इस धरती पर जन्म लिया है। प्रजावत्सल देवी अहिल्याबाई का पूरा जीवन प्रेरणादायक है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि केंद्र सरकार ने अतीत के गौरवांवित पलों को महसूस कराने के लिए ऐसे आयोजन समय-समय पर करने का निर्णय लिया है। जिसके माध्यम से हम सभी को अपने अतीत को जानने और बताने का अवसर मिले।

Scanned with OKEN Scanner

आयोजन : बविवि में अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती पर विचार संगोष्ठी

महारानी होल्कर का जीवन सिर्फ प्रजा हित के लिए था

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होलकर ने अपने लिए नहीं बल्कि प्रजा के लिए जीवन जीया। तमाम पारिवारिक कष्ट झेलकर लोक के लिए संघर्ष किया। राज्य में रोजगार इत्यादि के लिए कई प्रयास किए। केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक कई मंदिरों का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण कराए। उनका पूरा जीवन प्रजा कल्याण के लिए समर्पित था। इसलिए पुण्यश्लोका कहलाई। यह विचार हेमचंद विश्वविद्यालय दुर्ग के पूर्व कुलपति प्रो. एनपी दीक्षित ने व्यक्त किए। वे महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में गुरुवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आयोजित विचार संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। प्रो. दीक्षित ने कहा कि प्रजा के हित में महारानी अहिल्याबाई छोटे से घर में सामान्य जीवन व्यतीत करती थीं। आदि गुरू शंकराचार्य की तरह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए अद्वितीय काम किया। विधवा होने के बाद देवी अहिल्याबाई ने प्रजाहित में राज संभाला और अपने उल्लेखनीय कार्यों से प्रजावत्सल कहलाई। अपनी न्यायप्रियता, दानवीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध अहिल्याबाई जनता के हित में कई कठोर निर्णय भी लिए। प्रो. दीक्षित ने कहा कि सती प्रथा और जौहर जैसी सामाजिक समस्याएं थी। उस समय के मालवा के राजा ने अपनी बहु लोकमाता अहिल्याबाई को न्यायप्रक्रिया, कूटनीति और युद्धनीति में साथ लिया।

अहिल्या बाई होल्कर की जयंती पर हुए व्याख्यान में मौजूद विवि स्टाफ।

अहिल्याबाई का जीवन है प्रेरणादायक

संगोष्ठी के दौरान कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने कहा कि भारत की धरा का गरिमामयी इतिहास रहा है। कई वीरों और संतों ने इस धरती पर जन्म लिया। प्रजावत्सल देवी अहिल्याबाई का पूरा जीवन प्रेरणादायक है। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ शरद नेमा ने कहा कि लोकमाता का संपूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा। सभी को समान समझते हुए उन्होंने जन कल्याण के लिए कई काम किए। लोकमाता मानव के साथ पशुओं के प्रति भी उदार थीं। न्याय के लिए समान व्यवहार रखा। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि केंद्र सरकार ने अतीत के गौरवांवित पलों को महसूस कराने के लिए ऐसे आयोजन समय-समय पर करने का निर्णय लिया है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुनेश्वर लाल साहू ने किया। आभार डॉ. सोहन कुमार मिश्रा ने दिया। कार्यक्रम में वनवासी कल्याण आश्रम के संतोष परांजपे, प्रो. शकील अहमद, डॉ. वीके सोनी, डॉ सुकृता तिर्की, डॉ. संजय डोंगरे सहित अन्य उपस्थित थे। आयोजन में डॉ. दुर्गेश डिक्सेना व हरीश रामटेके ने सक्रिय सहयोग किया।

Scanned with OKEN Scanner